रात्रिक्लास 5-6-68 ओमशान्ति शिव बाबा और वरसा याद है?

यह है सच्चा2 ईश्वरीय परिवार। फिर होगा देवी परिवार। ईश्वरीय परिवार बड़ा या देवी परिवार बड़ा? सारा मदार है पोजीशन पर। यहां तुम्हारा रायल रायलटियस पोजीशन है। बाकी तुम्हारे पास जो आते हैं वह कैसे2 आते हैं सो तो तुम देखते हो। यह कोई समझते नहीं हैं कि हम वैश्यालय के निवासी हैं। हम विषस हैं। समझाने लिए बच्चों को मेहनत बहुत पड़ती है। क्योंकि समझाने से ट्रान्सफर करना है। मनुष्य से देवता बनाना मनुष्यों का कितना कैक्टर्स सुधरता है। कहां देवतायें कहां मनुष्य। रात दिन का फर्क पड़ जाता है। कैक्टर अभी तक भी बच्चे बहुत हैं जो अपनी चलन सुधारें तो अच्छा पद पा सकते हैं। आसुरी चलन से दैवी चलन में लाना बाप का ही काम है। और कोई सिखला न सके। तुम ब्राह्मण बच्चे ही जानते हो। बाबा आया हुआ है शूद्र से बदली कर ब्राह्मण बनाने। फिर ब्राह्मण से चेंज हो देवता बनेंगे। यह है हंसों का संगम युग। हंस पक्षी नहीं है। इन ज्ञान रत्नों की कितनी वैल्यु है। बच्चों का वातावरण चलन बड़ी अच्छी होनी चाहिए। रोज रात को देखना चाहिए हमारे में आसुरी चलन होगी तो नापास हो जावेंगे। स्वर्ग में जा न सकेंगे। हरेक को अपने चाल को देखना है। अपने ऊपर कृपा करनी है। श्रीमत पर चलना है। बाप रास्ता बताते हैं। जितना बाप को याद करेंगे उतना खाद निकलेगी। तुम नवज तो सभी के देखते होंगे। हमारे धर्म का कोई है। तुम ढूढ़ते हो सेपलिंग लगाने लिए। जंगल के मनुष्य जंगल के ही सेपलिंग लगाते रहते हैं। उनको यह पता नहीं है यह दैवी फूलों का बगीचा बना रहे हैं। जिसको आयु भी कितनी बड़ी होती है। तुम सतयुग के मालिक बनने वाले हो। यही खुशी बच्चों को होनी चाहिए। बाबा आया हुआ है फिर से वरसा देने लिये। रात्रिक्लास:-6-6-68:- जीवन/बहुतों को आगे चल कर हड्डीगुड नरम होगी। बुधि को पाना है जरूर। आजकल दुःख बहुत है ना। यह है शरारती दुनिया। बड़े आदमियों को भी मार डालते हैं। बच्चे यह तो समझ गये हो यह पुरानी दुनिया है। ड्रामा के आदि मध्य अन्त को ई भी मनुष्य नहीं जानते। नेती2 कहते हैं। परन्तु इसका अर्थ को जानते ही नहीं। बाप समझाते हैं। यह नालेज अभी तुमको मिलती है। फिर सतयुग में दरकार नहीं रहती है। ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है। तुम तुम जानते हो हम प्रदर्शनी में समझाते हैं किसको समझ में आवेगा किसको समझ में नहीं आवेगा। क्योंकि नई बात है ना। सूर्य वंशी चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही है। तुम समझते हो हम विश्व के मालिक बनेंगे। बच्चों के लिए ही गायन है अति ईन्द्रियसुख गोपा गोपियों से पूछो। क्योंकि तुम ही विश्व के मालिक बनते हो जो कभी स्वपने में भी न था कि हम बन सकते हैं। समझाना चाहिए भगवान ही विश्व का मालिक बनाते हैं। तुम बच्चे जानते हो पापा(बाप) आया हुआ है। यह वेहद का पपा है। पपा भी है सौदागर रत्नागर भी है। जादूगर भी है। तुम बच्चे कहते हो। जो फिर शक्ति मार्ग में भी गायन चला आता है। जादूगर है नई दुनिया स्थापन कर पुरानी दुनिया का विनाश करा देते हैं। यह कम जादुगरी है है क्या। यह है पढ़ाई। तुमको खुशी होती है ऊंच ते ऊंच भगवान हमको पढ़ाते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। यह सिर्फ तुम बच्चों की ही बुधि में है। कोई2 बन्धन में है। यह भी गायन है द्रोपदी ने पुकारा। हमको नंगन करते हैं। हमको नंगन करते हैं। अभी पुकारते हैं क्योंकि बाप कहते हैं पावन दुनिया में चलना है तो पतितनहीं बनना है। अबलाओं को सहन करना पड़ेगा। बाप धीरज देते हैं बच्चे थोड़ा समय है। तुम्हारी पढ़ाई है गुप्त है। जितना याद करेंगे उतना ताकत मिलेगी। बाप कहते हैं मैं सर्वशक्तिवान हूं। तो जरूर शक्ति किसको मिलेगी ना। तो बुधि में रहना चाहिए हम भी कंचन बनते हैं फिर औरों को भी बनाते हैं। बाबा हमेशा कहते हैं निश्चय बुधि हो तो बाप के पास ले आना चाहिए। तुम जानते हो बाबा के पास क्या सौगात ले जावें। अच्छे2 बच्चों को कोई समय माया मुश्किलें देती है। तो देह अभिमान में आ जाते हैं।

अच्छा मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।

*::***::*